साहित्य और शिक्षा में भाषा का महत्व

विकास विलासराव पाटील

श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263724

ABSTRACT:

यह लेख साहित्य और शिक्षा के आधार के रूप में भाषा के केंद्रीय महत्व को रेखांकित करता है। भाषा, मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करने वाली विशेषता, विचारों और भावनाओं के आदान-प्रदान का सजीव सांस्कृतिक तंत्र है। भारतीय परंपरा में भाषा को "वाक्" (परम शक्ति) माना गया है। साहित्य में भाषा, सौंदर्य, रस, समाज और संस्कृति को अभिव्यक्त कर सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनती है। शिक्षा में यह ज्ञान, बौद्धिक विकास और चिंतन का अनिवार्य माध्यम है। मातृभाषा में शिक्षा से आत्मविश्वास और विकास को बल मिलता है। लेख भाषा, साहित्य और शिक्षा के त्रिकोणीय संबंध को स्पष्ट करता है। यह वर्तमान में अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव और मातृभाषा की उपेक्षा जैसी चुनौतियों पर प्रकाश डालता है और उनके समाधान के रूप में मातृभाषा को प्राथमिकता देने और डिजिटल माध्यमों से प्रसार का सुझाव देता है, ताकि समाज का बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान सुनिश्चित हो सके।

KEYWORDS:

भाषा का महत्व, साहित्य, शिक्षा, मातृभाषा, वाक्.

प्रस्तावना:

मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करने वाली सबसे बड़ी विशेषता उसकी भाषा है। भाषा के माध्यम से ही वह अपने विचार व्यक्त करता है, भावनाएँ साझा करता है और ज्ञान का आदान–प्रदान करता है। भाषा केवल ध्वनियों का समूह न होकर एक सजीव सांस्कृतिक तंत्र है। साहित्य और शिक्षा दोनों का आधार भाषा है। साहित्य भाषा के सौंदर्य, रस और संस्कृति को अभिव्यक्त करता है, तो शिक्षा भाषा के द्वारा ज्ञान, मूल्य और

कौशल प्रदान करती है।

भाषा का स्वरूप और विशेषताएँ:

भाषा की परिभाषा कई विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से दी है। भारतीय परंपरा में भाषा को "वाक्" माना गया है, जो परम शक्ति का द्योतक है। संस्कृत में "वाक्" का अर्थ है वाणी या वचन। भारतीय दर्शन और वेदों में "वाक्" को दैवी शक्ति के रूप में देखा गया है। ऋग्वेद में "वाक्" को देवी के रूप में वर्णित किया गया है। यह माना गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति भी नाद (ध्वनि) और वाक् से हुई। इसीलिए "वाक्" को "सृष्टि की जननी" कहा गया है। भर्तृहरि ने कहा था – "वाक्यं ब्रह्म" अर्थात भाषा ही ब्रह्म है। कामताप्रसाद गुरु ने "हिंदी – व्याकरण" किताब में भाषा की परिभाषा उद्धृत करते हुए कहा गया है कि "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं।" तो फर्डिनेंड द सॉस्यूर ने इसे "संकेतों की एक प्रणाली" कहा है।

भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

1. संचार का माध्यम – यह विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का साधन है।
2. संस्कृति का संवाहक – भाषा के बिना संस्कृति का संरक्षण असंभव है।
3. ज्ञान का साधन – शिक्षा और विद्या भाषा के माध्यम से ही प्राप्त होती हैं।
4. सामाजिक सेतु – यह समाज के विभिन्न वर्गों और पीढ़ियों को जोड़ती है।

साहित्य में भाषा का महत्व:

1. साहित्य का अस्तित्व भाषा पर निर्भर

साहित्यकार के हृदय की भावनाएँ, अनुभव और चिंतन भाषा के सहारे ही मूर्त रूप ग्रहण करते हैं। यदि भाषा न हो तो साहित्य असंभव है। रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं – "साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज के हृदय का संस्कार करना है।" यह संस्कार तभी संभव है जब साहित्य उपयुक्त भाषा में व्यक्त हो।

2. सौंदर्य और रस की अभिव्यक्ति

कविता, कहानी, उपन्यास या नाटक – सबमें भाषा का सौंदर्य ही पाठकों को आकर्षित करता है। तुलसीदास ने अवधी, सूरदास ने ब्रज,

कबीर ने सधुक्कड़ी, प्रेमचंद ने खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया और साहित्य को जनसाधारण तक पहुँचाया। उनकी भाषा में भाव और रस का अद्‌भुत संयोग था, जिसने साहित्य को अमर बना दिया।

3. समाज और संस्कृति का दर्पण

साहित्य समाज का दर्पण है और भाषा उसकी अभिव्यक्ति। प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की दुर्दशा और सामाजिक विडंबनाएँ भाषा के माध्यम से स्पष्ट दिखाई देती हैं। भाषा के कारण ही उनका साहित्य सामाजिक चेतना का वाहक बन सका।

4. सामाजिक परिवर्तन और जागरण

भाषा और साहित्य समाज में परिवर्तन लाने का प्रभावी साधन हैं। स्वतंत्रता संग्राम के समय कवियों और लेखकों ने भाषा को हथियार की तरह प्रयोग किया। रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियाँ युवाओं में नई ऊर्जा भरती थीं। इसी प्रकार भारतेंदु हरिश्चंद्र और महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों ने भाषा और साहित्य से समाज में चेतना जगाई।

शिक्षा में भाषा का महत्व:

1. शिक्षा का आधार

भाषा के बिना शिक्षा असंभव है। चाहे विज्ञान, गणित, इतिहास हो या साहित्य – सभी विषय भाषा के माध्यम से ही पढ़ाए और समझाए जाते हैं। पं. सीताराम चतुर्वेदी एवं शिवप्रसाद मिश्र ने अपनी पुस्तक "भाषा की शिक्षा" में लिखा है – "भाषा शिक्षा केवल जानकारी का साधन नहीं, बल्कि विचार-निर्माण और संस्कार-निर्माण का माध्यम भी है।"

2. बौद्धिक विकास और चिंतन

भाषा विद्यार्थी की सोचने, समझने और तर्क करने की क्षमता को विकसित करती है। अच्छी भाषा-शक्ति से उसकी अभिव्यक्ति क्षमता प्रबल होती है और वह अपने विचार स्पष्ट रूप से रख पाता है।

3. मातृभाषा और शिक्षा

शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी

जानी चाहिए। एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक "समझ का माध्यम" में यह कहा गया है कि मातृभाषा में शिक्षा देने से बच्चे जल्दी सीखते हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भी कहा था – "विद्यार्थी को प्रारंभ में शिक्षा उसकी मातृभाषा में दी जानी चाहिए, अन्यथा उसका बौद्धिक विकास रुक सकता है।"

4. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता

भाषा शिक्षा का ऐसा साधन है जो राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधता है। हिंदी जैसी संपर्क भाषा भारत के विभिन्न प्रांतों के लोगों को जोड़ती है। शिक्षा के माध्यम से भाषा राष्ट्रीय चेतना को बलवती करती है।

भाषा, साहित्य और शिक्षा का त्रिकोणीय संबंध:

भाषा, साहित्य और शिक्षा तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा ज्ञान का विस्तार करती है, साहित्य संवेदनाओं को जागृत करता है और भाषा दोनों का माध्यम बनती है। यदि शिक्षा में साहित्य को स्थान दिया जाए तो विद्यार्थी का बौद्धिक ही नहीं, भावात्मक और नैतिक विकास भी होता है।

आज तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के कारण अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं का महत्व बढ़ गया है। डिजिटल शिक्षा, ई-पुस्तकें, सोशल मीडिया आदि ने भाषा के स्वरूप को बदल दिया है। परंतु मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा की भूमिका अभी भी केंद्रीय है। डिजिटल युग में भी हिंदी साहित्य और भाषा का महत्व कम नहीं हुआ है, बल्कि नए माध्यमों से इसका प्रसार और तेज हुआ है।

चुनौतियाँ और समाधान:

1. अंग्रेज़ी का प्रभाव – शिक्षा और साहित्य दोनों में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ रहा है।
2. मातृभाषा की उपेक्षा – बच्चों को प्रारंभ से ही अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाने की प्रवृत्ति मातृभाषा के विकास में बाधा है।
3. साहित्य का कम अध्ययन – शिक्षा में साहित्यिक कृतियों का अध्ययन कम होने से भाषा का सौंदर्य और संवेदनशीलता घट रही है।

समाधान

1. शिक्षा में मातृभाषा को प्राथमिकता देना।

2. साहित्यिक ग्रंथों को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना।
3. डिजिटल माध्यम से भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार करना।

निष्कर्ष:

भाषा साहित्य की आत्मा है और शिक्षा की आधारशिला। भाषा के माध्यम से साहित्य भाव और रस का संचार करता है, जबकि शिक्षा ज्ञान और मूल्य प्रदान करती है। तीनों मिलकर समाज का बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान करते हैं। अतः भाषा का संरक्षण, संवर्धन और समुचित प्रयोग करना हर नागरिक और शिक्षक का दायित्व है।

संदर्भ सूची:

1. भाषा की शिक्षा, पं. सीताराम चतुर्वेदी एवं शिवप्रसाद मिश्र, ई-पुस्तकालय प्रकाशन।
2. साहित्य और संस्कृति शिक्षण, प्रो. दिलीप सिंह, भाषा, हिंदी-भारत डॉट कॉम।
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. हिंदी साहित्य और संस्कृति, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन।
5. समझ का माध्यम, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
6. पाठ्यक्रम में भाषा और उसकी भूमिका: एक विचारपरक विश्लेषण, साहित्यकुंज डॉट नेट।
7. शिक्षा और संस्कृति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.